Register Number:

DATE:

ST. JOSEPH'S COLLEGE (AUTONOMOUS), BANGALORE-27
B.COM. HINDI– II SEMESTER
SEMESTER EXAMINATION: APRIL 2019
HNC 216 : HINDI

Time- 2 1/2 hrs Max Marks-70

This paper contains two printed pages and three parts

Part - I

प्रश्न 1. निम्नलिखित उद्धरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 2×8=16

1. नहीं सो दूरि नहीं सो नियरा, नहीं सो तात नहीं सो सियरा।
पुरिष न नारि करै नहीं क्रीरा, धांम नां धांम ब्यापै पीरा।।
नदी न नाव धरनि नहीं धीरा, नहीं सो काँच नहीं सो हीरा।
कहै कबीर बिचारि करि, तासूं लावो हेत।
बरन बिबरजत ह्वै पह्या, नां सो स्यां न सेत।।

अथवा

धन दारा अरू सुतन सों, लग्यों रहै नित चित्त।
नहि रहीम कोऊ लरठयो, गाढ़े दिन को मित्र।।

2. 'हा! तब क्या निष्कासन है ?
यह कैसा वन-शासन है ?
तू सबका जीवन-धन है,
किसका यह निर्दयपन है ?

अथवा

आभारी हूँ मैं उन सबका
दे गए व्यथा का जो प्रसाद
जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस उस राही को धन्यवाद।

प्रश्न 2. 'कलियों से' नामक कविता का सारांश और विशेषताएँ लिखिए। 1×14=14

प्रश्न 3. निम्नलिखित लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 1×10=10

1. 'साकेत' नामक काव्य संग्रह के रचनाकार कौन हैं ?
2. कबीर की मृत्यु किस स्थान पर हुई थी ?
3. 'मधुकलश' के रचनाकार का नाम क्या है ?
4. रहीमदास को अकबर ने किस उपाधि से सन्मानित किया था ?
5. कबीर के गुरू का नाम क्या है ?
6. 'मिट्टी की बारात' के रचनाकार कौन हैं?

7. हरिवंश राय 'बच्चन' का जन्म कब हुआ था ?
8. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म कहा हुआ था ?
9. रहीमदास की कितनी रचनाएँ प्रसिद्ध है ।
10. मैथिलीशरण गुप्त की मृत्यु कब हुई थी ?

Part – II

प्रश्न 4. निम्नलिखित भारतीय सिनेमा के विख्यात कलाकरों में से किसी एक का परिचय दीजिए । 1×10=10

1. अमिताभ बच्चन
2. राज कपूर

Part – III

प्रश्न 5. निम्नलिखित अनुच्छेद का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए । 1×10=10

उत्साह वास्तव में कर्म और फल की मिली जुली अनुभूति है जिसकी प्रेरणा से तत्परता आती है। यदि फल दूर ही पर दिखाई पड़े, उसकी भावना के साथ ही उसका लेशमात्र भी कर्म या प्रयत्न के साथ लगाव न मालूम हो तो हमारे हाथ पाँव कभी न उठें और उस फल के साथ हमारा संयोग ही न हो। इससे कर्म ऋंखला की पहली कड़ी पकड़ते ही फल के आनंद की भी कुछ अनुभूति होने लगती है। यदि हमें यह निश्चय हो जाए की अमुक स्थान पर जाने से हमें किसी प्रिय व्यक्ति का दर्शन होगा तो उस निश्चय के प्रभाव से हमारी यात्रा भी अत्यंत प्रिय हो जाएगी। हम चल पड़ेंगे और हमारे अंगों की प्रत्येक गति में प्रफुल्लता दिखाई देगी। यही प्रफुल्लता कठिन से कठिन कर्मों के साधन में भी देखी जाती है। वे कर्म भी प्रिय हो जाते हैं और अच्छे लगने लगते हैं। जब तक फल तक पहुँचनेवाला कर्म पथ अच्छा न लगेगा तब तक केवल फल का अच्छा लगना कुछ नहीं। फल की इच्छा मात्र हृदय में रखकर जो प्रयत्न किया जाएगा वह अभावमय और आनंदशून्य होने के कारण निर्जीव सा होगा।

प्रश्न 6. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर पत्र लिखिए । 1×10=10

1. परिपत्र
2. प्रेस विज्ञप्ति
3. कार्यालय ज्ञापन

————————×××××————————